उत्तर

MEERA PAD

Class 10 - हिंदी ब

1. भगवान भक्तों के संकट दूर करते हैं- प्रभु जिस प्रकार आपने द्रौपदी का वस्त्र बढ़ाकर भरी सभा में उसकी लाज रखी, नरसिंह का रुप धारण करके हिरण्यकश्यप को मार कर प्रह्लाद को बचाया, मगरमच्छ ने जब हाथी को अपने मुँह में ले लिया तो उसे बचाया और पीड़ा भी हरी। हे प्रभु! इसी तरह मुझे भी हर संकट से बचाकर संकट मुक्त करो।
2. मीरा ऊँचे-ऊँचे महलों और बीच-बीच में बरी की कल्पना इसलिए करती हैं, क्योंकि वह वृंदावन में कृष्ण के लिए भव्य और ऊँचा महल बनवाना चाहती है। वह इस महल के बीचों-बीच सुंदर फूलों से सजी फुलवारी बनाना चाहती हैं, ताकि अब कृष्ण सुबह शाम वहां विचरण करने के लिए आए तो इन फूलों से सजी फुलवारी को देखकर वे खुश हो जाएँ। अपने आराध्य को प्रसन्न रखने का हर संभव प्रयास करने की भावना दिखाई देती है।
3. मीरा के काव्य की भाषा मुख्य रूप से ब्रजभाषा है, किंतु उनकी रचनाओं में राजस्थानी, पंजाबी, गुजराती आदि भाषाओं के शब्दों का भी प्रयोग हुआ है। मीरा के पदो में बहुताधिक तद्भव शब्द हैं। मुहावरों के प्रयोग से भाषा प्राणमयी और सजीव हो उठी है। उन्होंने बिना किसी आडंबर के सहज रूप से अपनी बात कह दी। शांत, भक्ति तथा करुण रसों के सुंदर प्रयोग से उनकी रचनाओं का सौंदर्य बढ़ गया है। उनकी भाषा में पर्यायवाची शब्दों (हरि, गिरधर, मोहन, श्याम, गोविंद, मुरलीवाला आदि) तथा अनुप्रास एवं रूपक अलंकार आदि का प्रयोग दिखाई देता है। उनकी भाषा मधुर है। उनके पद गेयात्मक है, जिसके कारण उनकी रचनाएँ गायकों में लोकप्रिय है ।
4. प्रस्तुत पदों में मीरा भक्त-वत्सल श्रीकृष्ण को भाँति-भाँति के तर्क देकर दर्शन देने का आग्रह कर रही हैं। कभी वे दास्य भाव से आग्रह करती हैं कि वे उन्हें दर्शनामृत दे कर उसकी पीड़ा का अंत करें।
   कभी मीरा उपालंभ का आश्रय लेती हैं और अपने आराध्य को स्मरण कराती हैं कि किस प्रकार उन्होने द्रौपदी, प्रह्लाद व गजराज का उद्धार किया था। जब आराध्य-देव ने अपने सभी भक्तों के कठिन समय में उपस्थित हो कर उनका उद्धार किया है, तब अपनी इस उपासिका की पुकार पर भी उन्हें आना ही पड़ेगा। मीरा श्रीकृष्ण के दर्शन पाने के लिए प्रेम, उपालंभ आदि सभी प्रकार के तर्कों का आश्रय लेती हैं।इस तरह के विभिन्न तर्क देकर वो कृष्ण को दर्शन देने को कहती हैं।
5. **भाव सौंदर्य**
   उपरोक्त पंक्तियों में मीरा श्रीकृष्ण से प्रार्थना करते हुए कहती हैं कि हे श्याम! तुम मुझे अपनी दासी (सेविका) बना लो,और मुझे भक्ति के तीनों जागीर का लाभ दे दो।आपकी सेवा करते हुए मुझे आपके दर्शन करने का अवसर मिल जाएगा। आपके नाम-स्मरण के रूप में मुझे जेब-खर्च भी प्राप्त हो जाया करेगा। इस प्रकार मुझे आपके दर्शन, स्मरण और भक्ति रूपी जागीर–तीनों आसानी से मिल जाएँगी, जिससे मेरा जीवन सफल हो जाएगा।
   शिल्प सौंदर्य-
   i. ब्रज भाषा की मधुरता एवं राजस्थानी भाषा का पुट स्पष्ट रूप से दिखाई देता है।प्रस्तुत पंक्तियों गेयात्मक शैली में है।
   ii. इन पक्तियों में भक्ति रस विद्यमान है।
   iii. भाषा में कोमलता और याचना स्पष्ट रूप से दिखाई देती हैं।
   iv. अनुप्रास (भाव भगती) और रूपक अलंकार ('सुमरण' पर 'घरची' तथा 'भाव भगती' पर 'जागीरी' का आरोप) का अत्यंत सुंदर प्रयोग है,जो पद को और भी सुंदर बनाते हैं।
6. पठित पदों में मीराबाई ने हरि से स्वयं के कष्ट दूर करने की जो विनती की है उसमें स्वयं का कृष्ण से भक्त और भगवान का संबंध बताया है। मीराबाई श्री कृष्ण को उलाहना (शिकायत करते हुए) देते हुए कहती हैं कि वे भक्त वत्सल भगवान जैसे अपने अन्य भक्तों की पीड़ाओं का निवारण करते हैं वैसे ही उनकी (मीरा की) पीड़ाओं का भी निवारण करें। प्रस्तुत पद में मीरा ने भगवान की भक्त वत्सलता को दिखाने के लिए द्रोपदी, प्रह्लाद और गजराज के उदाहरण दिए हैं। उन्होंने कहा है कि भरी सभा में जब द्रोपदी का चीर हरण किया जा रहा था तब भगवान ने ही उसका चीर बढ़ाकर उसकी लाज रखी थी। हिरण्यकश्यप द्वारा जब अपने पुत्र भक्त प्रह्लाद पर अनेक अत्याचार किए जा रहे थे, तब भगवान विष्णु ने ही नरसिंह का अवतार लेकर उसके प्राणों की रक्षा की थी। गजराज (ऐरावत) को जब एक ग्राह (मगरमच्छ) जल में खींच रहा था तब डूबते हुए गजराज के प्राणों की रक्षाकर भगवान ने भक्तों के प्रति अपने प्रेम को व्यक्त किया था। मीरा भी प्रभु से प्रार्थना करती हैं कि वे (श्री कृष्ण) अपनी अनन्य दासी मीरा के प्रति भी ऐसी ही भक्त वत्सलता दिखाएँ।जिस प्रकार उन्होंने अपने भक्तों पर कृपा की है, उसी प्रकार वे इनपर भी अपनी कृपा दिखाएँ।
7. I. (iv) विपत्ति
   II. (ii) द्रौपदी का कौरवों की सभा में चीर बढ़ाकर
   III. (ii) भक्त प्रहलाद की
   IV. (iv) मगरमच्छ से (ग्राह से)
8. I. (iv) कृष्ण के दर्शन प्राप्त करना
   II. (iv) जमुना के किनारे
   III. (i) कृष्ण का रूप
   IV. (iii) साम्राज्य
9. **(b)** विपत्ति
   व्याख्या: विपत्ति
10. **(c)** द्रौपदी का कौरवों की सभा में चीर बढ़ाकर
    व्याख्या: द्रौपदी का कौरवों की सभा में चीर बढ़ाकर

SAIRAJ

11. **(b)** भक्त प्रहलाद की
व्याख्या: भक्त प्रहलाद की

12. **(b)** मगरमच्छ से (ग्राह से)
व्याख्या: मगरमच्छ से (ग्राह से)

13. **(b)** सभी विकल्प सही हैं
व्याख्या: सभी विकल्प सही हैं

14. **(a)** सभी विकल्प सही हैं
व्याख्या: सभी विकल्प सही हैं

15. **(b)** कुसुम्बी रंग की
व्याख्या: कुसुम्बी रंग की

16. **(a)** यमुना के तट पर
व्याख्या: यमुना के तट पर

17. **(d)** क्योंकि वे श्रीकृष्ण को देखने का एक भी मौका खोना नहीं चाहती
व्याख्या: क्योंकि वे श्रीकृष्ण को देखने का एक भी मौका खोना नहीं चाहती

18. **(d)** भगवान श्रीकृष्ण की
व्याख्या: भगवान श्रीकृष्ण की

19. **(b)** हे प्रभु! आप अपने सभी भक्तों के दुःख दूर करो।
व्याख्या: हे प्रभु! आप अपने सभी भक्तों के दुःख दूर करो।

20. **(b)** द्रौपदी की
व्याख्या: द्रौपदी की

21. **(c)** नरसिंह का
व्याख्या: नरसिंह का

22. **(c)** (ii), (iv), (v)
व्याख्या: कृष्ण ने मीरा को नहीं द्रौपदी को बचाया था। और अपना रूप बदलकर अपने भक्त की रक्षा की थी।

23. **(a)** हँसी को
व्याख्या: हँसी को

24. **(b)** मीठी मदिरा के
व्याख्या: मीठी मदिरा के

25. **(d)** उसका स्वास्थ्य बढ़ता है
व्याख्या: उसका स्वास्थ्य बढ़ता है

26. **(b)** आन्तरिक हँसी
व्याख्या: आन्तरिक हँसी

27. **(b)** उसका दुःख घटता है
व्याख्या: उसका दुःख घटता है

SAIRAJ